अध्याय

06

चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

not to be republished © JCERT

त्रिलोचन शास्त्री

मूल नाम – वासुदेव सिंह

जन्म – 20 अगस्त 1917

जन्म स्थान : गांव- कटघरापट्टी-चिरानीपट्टी, जिला- सुल्तानपुर (उ.प्र.) .

शिक्षा: अरबी-फारसी शिक्षा, अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. (पूर्वार्द्ध) काशी हिंदू विश्वविद्यालय

निधन- 9 दिसम्बर 2007

जीवन परिचय

रचनाएँ

कविता-संग्रह :

'धरती' (1945) , 'गुलाब और बुलबुल (1956) , 'दिंगत' (1957) , 'ताप के ताए हुए दिन' (1980) , 'शब्द' (1980) , 'उस जनपद का कवि हूं' (1981) , 'अरघान' (1984) , 'तुम्हें सौंपता हूं' (1985) , 'अनकहनी भी कुछ कहनी है' (1985) , 'अमोला' (1990) , 'मेरा घर' (2002) , 'जीने की कला

गद्य – संग्रह

'देशकाल' (1986) , डायरी : 'रोजनामचा' (1992) , आलोचना : 'काव्य और अर्थबोध' (1995) , 'मुक्तिबोध की कविताएं' (1991) .

संपादन

हंस, कहानी, वानर, प्रदीप, चित्ररेखा, आज, समाज और जनवार्ता

जीविका के लिए बरसों पत्रकारिता और अध्यापन तथा पत्र-पत्रिकाओं में संपादन-कार्य किया।

1952-53 में गणेशराय नेशनल इंटर कॉलेज, जौनपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे. 1967-72 के दौरान वाराणसी में विदेशी छात्रों को हिंदी, संस्कृत और उर्दू की व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की. उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की द्वैभाषिक कोश (उर्दू-हिंदी) परियोजना में कार्य (1978-84) . मुक्तिबोध सृजनपीठ, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) के अध्यक्ष रहे.

सम्मान

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित जिनमें प्रमुख हैं: साहित्य अकादमी 'ताप से ताय हुए दिन' (1981) , मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (म. प्र.) , हिंदी साहित्य।

अकादमी (दिल्ली) . का शलाका सम्मान, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद का भवानीप्रसाद मिश्र राष्ट्रीय पुरस्कार, सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद् (कोलकाता) सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का महात्मा गांधी सम्मान इत्यादि।

© JCERT not to be republished

साहित्यिक परिचय

कवि त्रिलोचन हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। वे आधुनिक हिन्दी कविता की प्रगतिशील त्रयी के तीन स्तम्भों में से एक थे। इस त्रयी के अन्य दो स्तम्भ नागार्जुन और शमशेर बहुदूर सिंह थे।

हिंदी के वरिष्ठतम कवियों में से एक त्रिलोचन जी ने अपनी रचनाओं में ग्रामीण जीवन के चित्रण को विशेष स्थान दिया है। उनकी रचनाएं समाज को उन्नत बनाने में सहयोगी सिद्ध होती हैं। निम्न वर्ग के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए उन्हें साक्षर बनने एवं जीवन में विकास करने के लिए प्रेरित करते हैं। जीवन के अंतर्विरोधों का उन्होंने सजीव चित्रण किया है।

त्रिलोचन जी की रचनाओं की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा है। उनकी भाषा में गहन से गहन भाव को भी सहजता से व्यक्त करने का गुण है।

उन्होंने भाषा को चुटीला और नाट्य रूप प्रदान करके कविताओं को एक नया स्वरूप प्रदान किया है।

उन्होंने गीत,गजल, सोनेट (चतुष्पथी) कुंडलिया,बरवै,मुक्त चंद जैसे तमाम माध्यमों में लिखा है। उनको हिंदी में सोनेट की स्थापना करने वाले कवि के रूप में जाना जाता है।

सोनेट के कारण अधिक चर्चित हुए त्रिलोचन एक समग्र चेतना के कवि हैं।

© JCERT not to be republished

कविता का सार

'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता कवि त्रिलोचन की प्रगतिवादी धारा से सम्बन्धित रचना है।

चंपा पढ़ी-लिखी नहीं है। कवि को पढ़ता देखकर उसको आश्चर्य होता है कि काले अक्षरों से इतने विविध प्रकार के स्वर कैसे फूट पड़ते हैं ? चंपा सुन्दर ग्वाले की अच्छी बेटी है। वह अपने पिता के पशुओं को जंगल में चराने ले जाती है। चंपा नटखट, चंचल और शरारती है। वह कवि को लिखने-पढ़ने देना नहीं चाहती।

एक दिन चंपा कवि के पास आई तो कवि ने उसे पढ़ाई-लिखाई के लिए प्रोत्साहित किया। कवि ने कहा---गाँधी बाबा चाहते हैं कि सभी देशवासी पढ़ाई-लिखाई करें, साक्षर बनें। पढ़ाई कठिन समय में काम आने वाली चीज है। उसे अवश्य पढ़ना चाहिए। चंपा कवि से कहती है कि गाँधी बाबा तो अच्छे आदमी हैं। वह पढ़ाई-लिखाई जैसे बेकार काम को करने के लिए नहीं कह सकते।

कवि चंपा को समझाता है कि आगे उसकी शादी होगी। उसका पति कुछ दिन उसके साथ रहेगा। फिर वह रोजगार की तलाश में कलकत्ता चला जायेगा। अत: उसको पढ़ना-लिखना सीखना चाहिए। चंपा कवि की बात काटते हुए तुरन्त कहती है-वह अपने पति को सदा अपने पास ही रखेगी। वह उसे कभी भी कलकत्ता नहीं जाने देगी। वह क्रोध में आकर शाप देती है कि कलकत्ते पर वज्रपात हो।

इसमें कवि ने रोजगार के लिए घर से महानगरों में पलायन की मार्मिक व्यंजना की है। चंपा एक अनपढ़ ग्वाले की पुत्री है। अपने आसपास बेरोजगारी से त्रस्त युवकों के घरों के बिखरने का वातावरण देखती रहती है। अत: उसका बाल मन महानगरों से नाराज है।

© JCERT not to be republished

सप्रसंग व्याख्या – 1

चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है

खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है

उसे बड़ा अचरज होता है:

इन काले चिन्हों से कैसे ये सब स्वर

निकला करते हैं

शब्दार्थ:

अच्छर = अक्षर।

चीन्हती = पहचानती।

अचरज = आश्चर्य।

चीन्ह = चिह्न, निशान, अक्षर।

स्वर = ध्वनि, आवाज।

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग- 1' में संकलित त्रिलोचन की रचना 'चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' से लिया गया है। कविता के इस अंश में कवि ने चंपा नाम की बालिका की अक्षरों संबंधी उत्सुकता का वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि कहते है कि चंपा पढ़ी-लिखी नहीं है। वह काले-काले अक्षरों को नहीं पहचानती, वह अक्षरों के महत्व से अनजान है। जब कवि बैठकर कुछ पढ़ रहे होते हैं तो वह उसके पास खड़ी होकर चुपचाप सुनती रहती है। चंपा के लिए पुस्तक या कविता आदि में छपे अक्षर केवल काले-काले चिह्न हैं। उसको यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य होता है कि इन काले-काले चिह्नों से इतनी सारी ध्वनियाँ किस प्रकार निकल आती हैं। वह नहीं समझ पाती कि इतने सारे स्वर इन काले अक्षरों में कहाँ छिपे रहते।

विशेष– उपर्युक्त पद्यांश मुक्त छंद में लिखी गई रचना है। यहां कवि ने बाल स्वभाव की सुपरिचित विशेषताओं का रोचक वर्णन किया है। जहाँ-तहाँ अलंकार भी आ गए हैं।

सप्रसंग व्याख्या – 2

चंपा सुन्दर की लड़की है

सुन्दर ग्वाला है : गायें भैंसें रखता है

चंपा चौपायों को लेकर

चरवाही करने जाती है।

चंपा अच्छी है

चंचल है

न ट ख ट भी है

कभी कभी ऊधम करती है

कभी कभी वह कलम चुरा देती है

जैसे तैसे उसे ढूंढ कर जब लाता हूँ

पाता हूँ — अब कागज़ गायब

परेशान फिर हो जाता हूँ

शब्दार्थ:

सुन्दर = चंपा का पिता, ग्वाला।

चौपायों = पशुओं।

© JCERT not to be republished

चरवाही = पशुओं को जंगल में चराने का काम।

चंचल = शरारती।

नटखट = शरारत करने वाली।

ऊधम = शोर-गुल, शैतानी।

संदर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह-1' में संकलित कवि त्रिलोचन की रचना 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि सुन्दर की पुत्री चम्पा के नटखट और उत्सुकतापूर्ण स्वभाव के बारे में बता रहे हैं।

व्याख्या– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहते हैं कि सुन्दर ग्वाला है। वह गायें और भैंसें पालता है। वह उनका दूध बेचता है। चंपा उसी ग्वाले की बेटी है। चंपा अपने पशुओं को लेकर उन्हें घास और हरियाली चराने के लिए जंगल में जाती है। चंपा एक अच्छी लड़की है। वह चंचल है और शरारती भी। चंपा नई-नई शरारतें करती रहती है। कभी-कभी वह कवि की कलम चुरा लेती है। कवि कोशिश करके उसको तलाश कर लाते है, तो लौटने पर देखते हैं कि अबकी बार उसके कागज ही चंपा ने छिपा दिये हैं। चंपा की इन शरारतों तथा शैतानियों से कवि परेशान हो जाते हैं।

विशेष– उपर्युक्त पद्यांश मुक्त छंद में लिखी गई रचना है। कवि ने बाल स्वभाव की सुपरिचित विशेषताओं का रोचक वर्णन किया है। जहाँ-तहाँ अलंकार भी आ गए हैं। 'चंपा चौपायों' को लेकर चरवाही करने जाती हैं में अनुप्रास अलंकार है। 'कभी-कभी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। चंपा की शरारतों के वर्णन में वात्सल्य रस है।

भाषा रोचक और बाल-स्वभाव के अनुकूल और शैली वर्णनात्मक है।

सप्रसंग व्याख्या – 3

चंपा कहती है:

तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर

क्या यह काम बहुत अच्छा है

यह सुनकर मैं हँस देता हूँ

फिर चंपा चुप हो जाती है

उस दिन चंपा आई, मैने कहा कि

चंपा, तुम भी पढ़ लो

हारे गाढ़े काम सरेगा

गांधी बाबा की इच्छा है —

सब जन पढ़ना-लिखना सीखें

चंपा ने यह कहा कि

मैं तो नहीं पढ़ूंगी

तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं

वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे

मैं तो नहीं पढ़ूंगी।

शब्दार्थ:

कागद – कागज,

© JCERT not to be republished

हारे बाड़ी काम चलेगा – कठिनाई में काम आएगा

गोदना – लिखना,

जन – आदमी,

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह-1' में संकलित कवि त्रिलोचन की रचना 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीहती' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि ने सुन्दर की पुत्री चम्पा के नटखट और उत्सुकतापूर्ण स्वभाव के बारे में बता रहे हैं। यहां पलायन की लोक अनुभव को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है और गांव में शिक्षा के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया है।

व्याख्या– चंपा कवि को शिकायत भरे स्वर में कहती है कि क्या तुम्हें लिखना- पढ़ना बहुत अच्छा लगता है जो दिन भर कागज में लिखते रहते हो ? क्या लिखा -पढ़ी करना बहुत अच्छा काम है ? मैं तो ऐसा नहीं समझती। इस पर कवि हंस देते हैं।

एक दिन चंपा कवि के पास आई तो कवि ने कहा कि उसे पढ़ना -लिखना सीख लेना चाहिए। जरूरत पड़ने पर काम आएगी। उन्होंने गांधी बाबा का हवाला देकर भी कहा कि गांधी बाबा भी चाहते थे कि सब कोई पढ़ना लिखना सीख ले। चंपा ने बड़ी सरलता से जवाब दिया-नहीं, मैं तो नहीं पढूंगी। तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं, फिर पढ़ाई लिखाई की बात कैसे करते हैं ?अच्छे हैं तो ऐसी बात क्यों करते हैं,मैं तो नहीं पढूंगी।

विशेष– अभिव्यक्ति सरल स्वाभाविक एवं शांतिपूर्ण है। अनुप्रास अलंकार है गांधी बाबा का अच्छा चित्रण हुआ है। बच्चों की अबोधता एवं स्पष्टता का चित्रण किया है। अनुप्रास अलंकार है। सहज एवं सरल भाषा है।

काव्यांश 4

मैंने कहा

कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है

ब्याह तुम्हारा होगा तुम गौने जाओगी,

कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता

बड़ी दूर है वह कलकत्ता

कैसे उसे सँदेसा दोगी

कैसे उसके पत्र पढ़ोगी

चंपा पढ़ लेना अच्छा है।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह-1' में प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि त्रिलोचन द्वारा रचित 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग— इस पद्यांश में बताया गया है कि चंपा पढ़ाई-लिखाई नहीं करना चाहती। तब कवि उसे प्रेमपूर्वक समझाता है —

व्याख्या– कवि चंपा को कहता है — चंपा! पढ़-लिख लेना अच्छी बात है। जब तुम्हारी शादी होगी। तुम ससुराल जाओगी। तब कुछ दिनों तक तो तुम्हारा पति तुम्हारे साथ रहेगा। फिर कमाने के लिए कलकत्ता चला जाएगा। तुम जानती हो कि कलकत्ता बहुत

© JCERT not to be republished

दूर है। तब तुम्हीं बताओ कि तुम अपने पति को संदेश कैसे भेजोगी? उसके भेजे हुए पत्र कैसे पढ़ोगी? इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम पढ़-लिख लो। पढ़ना-लिखना अच्छी बात है।

विशेष- भाषा एकदम सरल, सीधी और सादगीपूर्ण है। ब्याह, गौना, बालम, सँदेशा जैसे ग्रामीण शब्दों का प्रयोग से ग्रामीण वातावरण साकार हो उठा है। (3) अनुप्रास अलंकार। संवाद शैली से काव्य रोचक

काव्यांश-5

5. चंपा बोली: तुम कितने झूठे हो,

देखा हाय राम,

तुम पढ़-लिख कर इतने झूठे हो

मैं तो ब्याह कभी न करूँगी

और कहीं जो ब्याह हो गया

तो मैं अपने बालम को सँग साथ रखूँगी

कलकत्ता मैं कभी न जाने दूंगी

कलकत्ते पर बजर गिरे।

संदर्भ— प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह-1' में प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि त्रिलोचन द्वारा रचित 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने बताया है कि चंपा पढ़ाई-लिखाई के प्रति उदासीन है। लेखक उसे तरह-तरह से समझाता है। वह शादी, गौने और पति के संदेश को पढ़ने का हवाला देकर उसे पढ़ने-लिखने की प्रेरण देता है। तब चंपा प्रतिक्रिया में कहती है कि —

व्याख्या — हाय राम! तुम कितने झूठे हो। पढ़-लिखकर भी तुम मेरे साथ छल-कपट भरी बातें कर रहे हो। मैं तुम्हारी बातों में नहीं आऊँगी। तुमने विवाह का नाम लिया है तो मैं विवाह करूँगी ही नहीं। यदि मेरा विवाह हो भी गया तो मैं अपने पति को अपने पास रखूँगी। उसे कलकत्ता नहीं जाने दूँगी। कलकत्ता पर वज्र गिरे। यानि उनका सर्वनाश हो जाये

विशेष- यहाँ कवि ने पढ़ाई को बहुत आवश्यक बताया है। भाषा अत्यंत सरल, सीधी और सादगीपूर्ण है। अनुप्रास अलंकार है। लोकभाषा में प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है। 'संग-साथ' में अनुप्रास लंकार का प्रयोग हुआ है

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तर- चंपा नहीं चाहती कि उसकी शादी के बाद उसका पति धन कमाने के लिए कलकत्ता जाए। कलकत्ता उसके परिवार को तोड़ने वाला है, उसे उसके पति से अलग करने वाला है। वह ऐसे महानगर को सहन नहीं कर सकती। इसलिए वह कहती है कि कलकत्ता पर बजर गिरे।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 2. चंपा को इस पर क्यों विश्वास नहीं होता कि गांधी बाबा ने पढ़ने-लिखने की बात कही होगी?

उत्तर- चंपा ने दो बातें सुन रखी हैं -

1. पढ़ाई-लिखाई से कुछ नहीं होता।

2. गांधी बाबा अच्छे मनुष्य हैं।

इस कारण वह विश्वास नहीं कर पाती कि गांधी बाबा जैसे अच्छे मनुष्य ने पढ़ने-लिखने जैसी बात कही होगी।

प्रश्न 3. कवि ने चंपा की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- कवि ने चंपा की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है-

1. भोलापन, 2. शरारती स्वभाव, 3. मन की बात को बिना छिपाए सीधे मुंह पर कहना, 4. परिवार के साथ मिलकर रहने की भावना, 5. कष्ट देने वाले के प्रति खुला विद्रोह।

प्रश्न 4. आपके विचार में चंपा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ूंगी?

उत्तर- मेरे विचार से चंपा के मन में यह बात बैठी हुई है कि पढ़े-लिखे लोग अच्छे मनुष्य नहीं होते। वे पढ़ने लिखने के बाद गांव छोड़ कर चले जाते हैं। वे चालाक, घमंडी और कपटी हो जाते हैं। वे अनपढ़ों को गँवार समझते हैं। इस कारण उसने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया है कि वह नहीं पढ़ेगी।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1. यदि चंपा पढ़ी-लिखी होती तो कवि से कैसे बातें करती?

उत्तर- यदि चंपा पढ़ी-लिखी होती तो वह कवि को उसकी योग्यता के लिए उचित सम्मान देती। वह उससे बड़े प्रेम, सम्मान और विनम्रता से बातें करती। वह अपने को कुछ सिखाने के लिए कवि से अनुरोध करती।

प्रश्न 2. इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की किस विडंबनात्मक स्थिति का वर्णन हुआ है?

उत्तर- इस कविता में पूर्वी प्रदेश की स्त्रियों की अनपढ़ता और उनके अपने प्रिय से दूर रहने की विवशता का वर्णन हुआ है। अनपढ़ हैं। उनके गांवों में रोजगार नहीं है। अतः उनके पतियों को रोजगार के लिए कलकत्ता जैसे महानगरों में जाना पड़ता है। उनकी विडंबना यह है कि वे पति की चिट्ठी को पढ़ भी नहीं पाती और अपना संदेश लिखकर भी नहीं भेज पातीं। अतः वह घुट-घुटकर जीती हैं।

प्रश्न 3. संदेश ग्रहण करने और भेजने में असमर्थ होने पर एक अनपढ़ लड़की को किस वेदना और विपत्ति को भोगना पड़ता है, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर- अनपढ़ लड़की को अनेक मानसिक विपत्तियों में से गुजरना पड़ता है। वह न तो पत्र लिखकर अपने माता-पिता या पति को हाल-चाल दे सकती है, न ही उनकी चिट्ठी

© JCERT not to be republished

पढ़कर उनका हाल-चाल जान सकती है। यदि वह किसी और से चिट्ठी लिखवा ले तो भी अपने मन की सारी प्रेम भरी बातें और वियोग के दुख को नहीं बतला सकती। उसकी सबसे बड़ी पीड़ा तो अकेलेपन को लेकर होती है। वह उसे अन्य किसी के साथ नहीं बांट सकती। इसलिए उसके मन की बातें मन में ही रह जाती हैं। इसी प्रकार वह अपने पति की प्रेम-भरी चिट्ठी भी किसी दूसरे से पढ़वाने में संकोच अनुभव करती है। वह विचार कर दुखी होती है कि यदि मैंने पढ़ाई-लिखाई की होती तो आज मुझे कठिनाई नहीं होती।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.चंपा किसकी लड़की है?

क. सुंदर की

ख. कवि की

ग. इंदर की

घ. चंदर की

उत्तर- क.सुंदर की

2. चंपा क्या काम करती है?

क. मजदूरी

ख. चरवाही

ग. घरेलू नौकरानी

घ. पढाई-लिखाई

उत्तर- ख.चरवाही

3. चिन्हों से स्वर निकलते सुनकर चंपा को क्या होता है?

क. प्रसन्नता

ख. आश्चर्य

ग. डर

घ. भय

उत्तर- क.प्रसन्नता

4. कवि ने पढ़ाई करना किस की इच्छा बताया था?

क. शास्त्री जी

ख. नेहरू जी

ग. गांधीजी

घ. बोस जी

उत्तर- ग.गांधीजी

5. चंपा कहां तक पढ़ी लिखी है?

क. अशिक्षित है

ख. और शिक्षित है

ग. उच्च शिक्षित है

घ.शिक्षित है

उत्तर- क. अशिक्षित

© JCERT not to be republished

6. चंपा का स्वभाव कैसा है?

क. क्रोधी

ख. शंकालु

ग. चंचल

घ. गंभीर

उत्तर– ग.चंचल

7. चंपा को किस बात पर अचरज होता है?

क. कवि को देख कर

ख. विद्यालय जाकर

ग. काले काले अक्षरों को देखकर

घ. अपनी शादी की बात सुनकर

उत्तर– ग. काले काले अक्षरों को देखकर

8. 'हारे गाढ़े काम सरेगा' में 'हारे गाढे' का क्या अर्थ है?

क. हर समय

ख. कठिनाई में

ग. विदेश जाने पर

घ. हार जाने पर

उत्तर– ख. कठिनाई

9. 'बजर' शब्द का क्या अर्थ है?

क. वज्रपात

ख. हिमपात

ग. बजना

घ. सुनना

उत्तर– क. वज्रपात (भारी मुसीबत)

© JCERT not to be republished